मुखपृष्ठ
साहित्यकारों की वेबपत्रिका
साहित्यसुधा
वर्ष: 5, अंक 103, फरवरी(द्वितीय), 2021

"दूर हटो ऐ दुनिया वालों हिन्दुस्तान हमारा है" भारतीय कवि एवम गीतकार - कवि प्रदीप

डॉ. राजेश कुमार शर्मा"पुरोहित"

देशभक्ति से ओतप्रोत गीत लिखने वाले हिंदुस्तान के मशहूर गीतकार,गायक ,कवि प्रदीप का जन्म **6** फरवरी **1915** को मनाया जाता है। औदीच्य ब्राह्मण परिवार में जन्में इस नक्षत्र ने देश दुनिया मे देशभक्ति के गीतों से अपनी पहचान बनाई व अमर हो गए । बड़नगर (उज्जैन) मध्यप्रदेश में साधारण परिवार में जन्में कवि प्रदीप का मूल नाम रामचन्द्र द्विवेदी था।इनके पिता का नाम नारायण भट्ट था।इनकी पत्नी सुभद्रा बेन । सरगम व मितुल सन्तान थी।कवि प्रदीप ने शिवाजी राव हाई स्कूल इंदौर मध्यप्रदेश से प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त की। स्नातक परीक्षा **1939** में दारागंज हाई स्कूल लखनऊ उत्तरप्रदेश से उतीर्ण की।

कवि प्रदीप का लिखा देशभक्ति गीत ऐ मेरे वतन के लोगों काफी प्रसिद्ध हुआ। **1962** भारत चीन युद्ध के समय ये गीत लिखा था। शहीद सैनिकों की श्रधांजलि में ये गीत लिखा था। देश की सुप्रसिद्ध गायिका कोकिल कण्ठ लता मंगेशकर ने ये गीत **26**वजनवृ **1963** को गाया तो तत्कालीन प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू की आंखें भर आईं थी । कवि प्रदीप ने राजस्व ,युद्ध विधवा कोष में जमा करने की अपील की । मुम्बई उच्च न्यायलय ने **25** अगस्त **2005** को संगीत कम्पनी एच एम वी को इस कोष में दस लाख रुपये जमा करने के आदेश दिए थे।

1940 में बनी फिल्म बन्धन ने प्रदीप को पहचान दिलाई थी। **1943** की स्वर्ण जयंती हिट फिल्म किस्मत के गीत " आज हिमालय की चोटी से फिर हमने ललकारा है दूर हटो ऐ दुनिया वालों हिन्दुस्तान हमारा है"। इस गीत से ब्रिटिश सरकार नाराज हो गई और कवि प्रदीप को गिरफ्तार करने के आदेश जारी कर दिए। इस वजह से कवि प्रदीप को भूमिगत रहना पड़ा।**1940** में बन्धन फ़िल्म के गीत चल चल रे नोजवान। **1954** की फ़िल्म जागृति के गीत आओ बच्चों तुम्हें दिखाएं। दे दी हमें आज़ादी खड्ग बिना ढाल,साबरमती के सन्त तूने कर दिया कमाल।**1975** में बनी फिल्म जय माँ सन्तोषी का गीत "यहाँ वहाँ जहाँ तहाँ, मत पूछो कहाँ तहाँ।"

पचास सालो में कवि प्रदीप ने **71** फिल्मों में **1700** गीत लिखे जो फिल्मों में सुपरहिट हुए।

रामचन्द्र द्विवेदी कैसे प्रदीप बने इसकी भी रोचक स्टोरी है। एक बार रामचन्द्र द्विवेदी बम्बई कवि सम्मेलन में गए वहाँ बॉम्बे टाकीज में काम करने वाले व्यक्ति को उनकी कविता पसंद आई। उस व्यक्ति ने हिमांशु राय से कहा। उन्होंने कवि प्रदीप को **200** रूपये में नोकरी पर रख लिया। हिमांशु राय ने तब कहा था रेलगाड़ी जैसा लम्बा नाम ठीक नहीं तभी रामचन्द्र द्विवेदी ने अपना नाम बदलकर प्रदीप रख लिया।

प्रदीप से कवि प्रदीप कैसे बने आओ जानें। बम्बई में उस समय फ़िल्म जगत में प्रसिद्ध फ़िल्म अभिनेताओं में अभिनेता प्रदीप का नाम प्रसिद्ध था। डाकिये को डाक देने में परेशानी आंने लगी। कभी डाकिया प्रदीप की डाक को अभिनेता प्रदीप को दे आता। इसको देखकर प्रदीप ने अपना नाम कवि प्रदीप रख लिया।

कवि,गीतकार गायक प्रदीप ने जय सन्तोषी माँ जागृति बन्धन किस्मत नास्तिक हरि दर्शन वामन अवतार स्कूल मास्टर कभी धूप कभी छाँव जैसी सुपरहिट फिल्मों में गीत लिखे।

कवि प्रदीप के सुप्रसिद्ध गीतों में ए मेरे वतन के लोगों,सूनी पड़ी रे सितार कंगन फ़िल्म,नाचो नाचो प्यारे मन के मोर (पुनर्मिलन) ,चल चल रे नोजवान, चने जोर गरम बाबू बन्धन,पीयू पीयू बोल प्राणी,रुक न सको तो जाओ (बन्धन),दूर हटो ऐ दुनिया वालों,तेरे द्वार खड़ा भगवान (वामन अवतार),पिंजरे के पंछी रे (नागमणि),मुखड़ा देख ले प्राणी दो बहन,इंसान का इंसान से हो भाईचारा (पैगाम), टूट गई है माला मोती बिखर गए (हरिश्चंद्र तारामती),चल अकेला चल अकेला (सम्बन्ध),मारने वाला है भगवान बचाने वाला है भगवान (हरि दर्शन),

1997-1998 में कवि प्रदीप को दादा साहब फाल्के पुरस्कार से सम्मानित किया गया कला एवं संस्कृति विभाग मध्यप्रदेश ने कवि प्रदीप राष्ट्रीय सम्मान की शुरुआत की। वर्ष **2013** में प्रथम पुरस्कार देश के सुप्रसिद्ध गीतकार गोपालदास नीरज को प्रदान किया। इन्हें फ़िल्म जर्नलिस्ट अवार्ड इम्पा अवार्ड महान कलाकार अवार्ड सन्त ज्ञानेश्वए**8** अवार्ड नेशनल इंटरीगेशन अवार्ड **1993** में प्रदान किया।

देश विदेश में कवि प्रदीप ने करोड़ों लोगों के दिल मे राज किया है ।देश भावना को जगाने के लिए कवि प्रदीप के गीत युगों युगों तक गाए जाते रहेंगे

साहित्य जगत के साथ ही फ़िल्म जगत में कवि प्रदीप ने अपनी अनूठी छाप छोड़ दी हर भारवासी में देश प्रेम की भावना जगाने वाले कवि को कोटि कोटि नमन।

कृपया रचनाकार को मेल भेज कर अपने विचारों से अवगत करायें